ISSN : 2249–9318
Peer-Reviewed Refereed Research Journal
UGC Approved Journal No: 41389

वर्ष-16 \ अंक-15-16 \ जनवरी-दिसम्बर, 2020

अनुसंधान

छायावाद पर केन्द्रित अंक

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार गर्ग

जयशंकर प्रसाद के काव्य में मानवीय संवेदना व सौंदर्य बोध

डॉ. प्रीती सिंह*

मानवीय संवेदना से हमारा अभिप्राय उस प्रत्येक चिंता से है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। संवेदना का अर्थ है–'पूर्णता के अर्थ में वेदना।' मानव जीवन का महत्वपूर्ण गुण है संवेदना।

संवेदना यह सुंदर शब्द मानवीय जीवन के लिए जितना आवश्यक है, उससे भी ज्यादा एक स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है। संवेदना भावनात्मक लोक से जुड़ा है। संवेदना के बिना भाव उमड़ ही नहीं सकता। इसलिए संवेदना मानव जीवन एवं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस साहित्य में मानवीय संवेदना नहीं होती, उस साहित्य की उम्र बहुत कम होती है क्योंकि साहित्य संवेदनाओं पर आधारित है। संवेदनरहित साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वर्तमान में यथार्थ परक साहित्य लिखा जा रहा है। परंतु उसमें भी संवेदना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है, क्योंकि साहित्य चाहे वह स्वानुभूति का हो या सहानुभूति का। दोनों में ही अनुभूति सम्मिलित है। हम कह सकते हैं कि जहाँ अनुभूति है, वहीं मानवीय संवेदनाएं हैं।

जयशंकर प्रसाद छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं। उनके काव्य में मनुष्य मात्र की चेतना का विस्तार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्रसाद जी का मुख्य लक्ष्य भारतीय संस्कृति एवं जीवन के विविध पक्षों व मूल्यों का पुनर्स्थापना करना था। जिसमें मानवीय मूल्य एवं संवेदना सर्वोपरि है। अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से उच्च मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं रक्षा में सदैव प्रसाद जी प्रयत्नशील रहे हैं। वे एक ओर तो काव्य की स्थूल सौंदर्य और दूसरी ओर स्थूल से सूक्ष्म सौंदर्य की ओर गति प्रदान करने वाले सशक्त कवि हैं।

प्रसाद जी के काव्य में जीवन का विस्तृत क्षेत्र समाहित है। प्रेम-सौंदर्य, देश-प्रेम, रहस्यानुभूति, दर्शन, प्रकृति-चित्रण, मानवीय मूल्य आदि विविध विषयों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों को लिखने वाले श्रेष्ठ कवि भी बने।

'आँसू' उनका प्रसिद्ध वियोग काव्य है। उसके एक-एक छंद में विरह की मार्मिक पीड़ा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती दिखाई देती है–

"जो घनीभूत पीड़ा थी,
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बनकर,
वह आज बरसने आयी।।"

'कामायनी' प्रसाद का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह छायावादी मानवतावाद का प्रखर उद्घोष है। यह ग्रंथ प्रसाद की परिष्कृत मानवीय चेतना का विस्तृत रूप है। 'कामायनी' की कथा का आधार उपनिषद है, जिसमें जल प्रलय की घटना के पश्चात आदि पुरुष मनु और श्रद्धा द्वारा मानवीय सृष्टि को पुनः प्रारम्भ

* सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमांचल प्रदेश